षट्त्रिंशिका-चतुष्क

[4 छत्तीसी - परमाणु, निगोद, पुद्गल, बंध। चारों भगवती सूत्र (विवाह प्रज्ञप्ति) नामक 5वें अंग की टीका में नवांगी टीकाकार श्री अभयदेवसूरि म. ने कहीं से उद्धृत की है। चारों क्रमश: 5वां शतक 7वां उद्देशा, 11वां शतक 10वां उद्देशा, 5वां शतक 8वां उद्देशा, 8वां शतक 9वें उद्देशे में है। प्रथम 3 छत्तीसी की टीका रत्नसिंह सूरि म. ने लिखी है। अंतिम की टीका वानर्षि मुनि ने रची है जो सं 1600-1650 आसपास हो गए।]

परमाणुखण्ड षट्त्रिंशिका

[इसमें 15 गाथा ही होने से खंड षट्त्रिंशिका कहते हैं]

गा.1 यहाँ पुद्गलों की क्षेत्र, अवगाहना, द्रव्य और भाव में स्थितिकाल का अल्पबहुत्व विचारा गया है।

1. क्षेत्रस्थानायु = पुद्गलों का एक ही क्षेत्र में रहने का काल।
2. अवगाहनास्थानायु = नियत परिमाण वाले आकाशप्रदेश में रहने रूप अवस्थान का काल।
3. द्रव्यस्थानायु = पुद्गलों के एक स्कंध रूप परिणाम से रहने का काल।
4. भावस्थानायु = पुद्गलों में विवक्षित कृष्णत्वादि गुणों का अवस्थान काल।

* अभिप्राय- विवक्षितक्षेत्र में कोई पुद्गलस्कंध असत्कल्पना से 10 आकाशप्रदेश में जब तक रहता है, तब तक क्षेत्रस्थानायु। वही स्कंध उस क्षेत्र से अन्य क्षेत्र में जब तक 10 प्रदेश में ही रहे, तब तक अवगाहनास्थानायु। जब वही स्कंध विश्रसा से घन होकर 5 प्रदेश में या पोला होकर 15 प्रदेश में रहे, तब तक द्रव्य स्थानायु। वही पुद्गलस्कंध परमाणुओं के भेद-संघात से अन्य द्रव्य को प्राप्त भी जब तक कृष्णत्वादि पूर्व पर्यायों को नहीं छोड़ता, तब तक भावस्थानायु।

* इन चारों का क्रमश: असंख्य गुण प्रमाण है।

DATE ___/___/___

अव. क्षेत्रस्थानायु की अल्पता का कारण -

गा.2 आकाश अमूर्त होने से उसका पुद्गलों के साथ विशिष्ट बंध के कारण रूप स्नेहादि का अभाव होने से स्कंध क्षेत्र में कुछ काल तक रहकर उसी परिणाम को नहीं छोड़ता हुआ अन्य क्षेत्र में जाता है। अतः क्षेत्रस्थानायु सबसे अल्प है।

अव. अवगाहनास्थानायु का बहुत्व विचारते हैं -

गा. 3-5 स्कंध उतनी ही अवगाहना वाला अन्य क्षेत्र में भी प्राप्त होता है अतः अवगाहनायु अधिक है। किंतु अवगाहना बदलने पर क्षेत्र तो अवश्य बदलता है अतः क्षेत्रायु कम है। क्योंकि -
क्षेत्रायु नियतप्रदेशों में व्याप्तिरूप अवगाहना और अगमनरूप क्रिया, दोनों से नियंत्रित है किंतु अवगाहनायु मात्र अवगाहना से ही नियंत्रित है।

अव. द्रव्यायु का बहुत्व -

गा. 6-9 संकोच अथवा विकोच से अवगाहना बदलने पर भी स्कंध के परमाणुओं की संख्या उतनी ही रहती है, इसलिए अवगाहना बदलने पर भी द्रव्य नहीं बदलता। किंतु संघात या भेद से द्रव्य बदलने पर अवगाहना बदल जाती है।

प्र. संघात होने पर भी अवगाहना न बदले, ऐसा हो सकता है ?

उ. संघात से तो स्कंध सूक्ष्मतर परिणत होने का शास्त्रों में श्रवण होने से द्रव्य बदलने पर अवगाहना का नाश अवश्य होता है। क्योंकि
अवगाहनायु द्रव्य के नियतपन से संबद्ध है अर्थात् संकोच-विकोच के अभाव में ही होती है। किंतु द्रव्य अवगाहना से संबद्ध नहीं है, द्रव्य तो अवगाहना बदलने पर भी उतना ही रहता है। eg. द्रुमत्व होने पर खदिरत्व, शिंशपात्वादि होता है, द्रुमत्व न होने पर वे भी नहीं होते।
अतः द्रव्यायु अवगाहनायु से असंख्यगुणा है।
[संकोच-विकोच = परमाणु की समान संख्या में ही स्कंध का सिकुड़ना या फैलना]

अव. भावायु का बहुत्व - [संघात - नए परमाणु जुड़ना, भेद - कुछ परमाणु निकलना]

अव. भावायु (गुणायु) का बहुत्व -

गा. 10-12 संघातादि से द्रव्य बदलने पर भी वर्णगंधादि पर्याय होते हैं eg. घिसा हुआ सफेद कपड़ा [- जब वह नया रहता है, तब भी श्वेत वर्ण। जब घिसा जाता है, तब घिसने से द्रव्य बदलता है किंतु वर्ण तो श्वेत ही रहता है।]

सभी गुण बदलने पर तो द्रव्य या अवगाहना नहीं होते। क्योंकि -

द्रव्यायु संघात-भेद रूप धर्म से संबद्ध है। यहाँ संबंध ~~वैध~~ वैधर्म्य रूप जानना अर्थात् संघात-भेद के अभाव में द्रव्यायु होती है। किंतु गुणायु संघातादि के साथ संबद्ध नहीं है।

अतः उस या अन्य क्षेत्र में, उस या अन्य अवगाहना में, उस या अन्य द्रव्य में, सर्वत्र गुण चिरस्थायी होने से पर्याय प्राप्त होती है। अतः भावायु द्रव्यायु से असंख्य गुण है।

अव. शंका और उत्तर -

गा. 13-14 (शंका-) यह एकांत नहीं है कि द्रव्य बदलने पर गुण नहीं बदलते क्योंकि गुणों का विनाश देखा जाता है तथा गुण नष्ट होने पर भी द्रव्य तदवस्थ ही देखा जाता है। कोई द्रव्य बदलने पर उसके गुण भी उसी समय बदल जाते है। कोई द्रव्य तदवस्थ ही रहने पर भी उसमें अगुणनाश होता है eg. कच्चे घड़े को पकाने से रक्तवर्ण नष्ट होता है।

गा. 15 (उत्तर-) द्रव्य बदलने पर गुण बदलना और द्रव्य न बदलने पर भी गुण बदलना जो कहा, वह सत्य है। किंतु गुण बहुत हैं। एक स्कंध बदलने पर भी उसमें रहे सभी गुणों का नाश नहीं होता। जब तक एक गुण भी उसी अवस्था में रहेगा तब तक भावायु चालू रहेगी। अतः गुण की बहुलता से भावायु द्रव्यायु से असंख्य गुण है।

* यहाँ सामान्य गुण या गुण की कोई एक विशेष पर्याय दोनों के आश्रय से भावायु असंख्य गुण है।

इति परमाणुखंड षट्त्रिंशिका समाप्ता।

DATE / /

निगोद षट्त्रिंशिका

गा. 1 लोक। पराजलोक प्रमाण, असंख्य प्रदेशात्मक है। अनंत जीवों का एक साधारण शरीर निगोद कहा जाता है। प्रत्येक निगोद की अवगाहना अंगुल का असंख्यातवां भाग। जहाँ एक निगोद है, वहीं असंख्य निगोद होती है। लोक में कुल असंख्य निगोद। एक आकाश प्रदेश में जघन्य से एक निगोद या सर्व निगोद या सर्व जीवों का असंख्यातवां भाग होता है। जीव प्रदेश की अपेक्षा से भी एक आकाश प्रदेश में सभी जीवों के प्रदेश की अपेक्षा से असंख्यात भाग के जीव प्रदेश होते हैं।

जघन्य से एक आकाश प्रदेश में जीवों के कितने प्रदेश अवगाढ होते हैं? उत्कृष्ट से एक आकाश प्रदेश में जीवों के कितने प्रदेश अवगाढ हैं? सर्व जीवों की ~~इन दोनों का अल्पबहुत्व~~ ? संख्या? इन तीनों का अल्पबहुत्व?

अव. उत्तर देते हैं:-

गा. 2 एक आकाश प्रदेश में जघन्य से सर्व जीव राशि की अपेक्षा थोड़े जीव प्रदेश होते हैं क्योंकि एक आकाश प्रदेश में असंख्यातवें भाग प्रमाण जीव प्रदेश होते हैं अथवा एक आकाश प्रदेश में ~~से~~ जघन्य से रहे जीव प्रदेश की अपेक्षा सर्व जीव असंख्य गुण हैं। सर्व जीव संख्या से उत्कृष्ट पद में रहे जीव प्रदेशों की संख्या विशेषाधिक है।

(जघन्य पद जीव प्रदेश $\xrightarrow[\text{गुण}]{\text{असंख्य}}$ सर्व जीवों की संख्या $\xrightarrow[\text{विशेषाधिक}]{}$ उत्कृष्ट पद जीव प्रदेश)

अव. जघन्य पद और उत्कृष्ट पद कहाँ होते हैं?-

गा. 3 ये जघन्य पद राशि वाले निगोद के गोले लोकांत पर निष्कुट में होते हैं। इन्हें तीन दिशा में ही स्पर्शना होती है क्योंकि तीन दिशा में अलोक से आवृत होते हैं। इन गोलों को 'खंड गोल' कहा जाता है।

उत्कृष्ट पद राशि वाले निगोद के गोले लोक मध्य में होते हैं। इन्हें 6 दिशा में स्पर्शना होती है। इन्हें खंड या संपूर्ण गोल कहा जाता है।

'गोल' = असंख्य निगोद का समूह।

अव. पूर्वपक्ष →

गा. 4 आपने जघन्य पद प्रदेश राशि से असंख्य गुण सर्व जीव कहे, उससे उत्कृष्ट पद विशेषाधिक। अतः जघन्यपद से उत्कृष्ट पद असंख्यगुण हुआ। यह युक्त नहीं है क्योंकि जघन्य पद को 3 स्पर्शना और उत्कृष्ट पद को 6 स्पर्शना। अतः द्विगुण ही हुआ, असंख्य गुण नहीं।

अव. उत्तरपक्ष →

गा. 5 जघन्य पद में एक निगोद जितनी ही अवगाहना है। उत्कृष्ट पद में उससे असंख्य गुण स्पर्शना होती है, अतः असंख्य गुण जीव प्रदेश होंगे। –

~~जघन्यपद~~ = निगोद का एक गोला जहाँ होता है, वहीं समवगाही असंख्य गोले अवश्य होते ही हैं।

जघन्य पद = निष्कुट में रहा गोला, जिसे 3 दिशा में स्पर्शना होती है। वहीं असंख्य गोले होते हैं।

उत्कृष्ट पद = लोकमध्य में, 6 स्पर्शना। इसे असंख्य निगोदों के गोलों की स्पर्शना होती है। असंख्य समावगाही, एक प्रदेश न्यून अवगाह वाले असंख्य, 2 प्र. न्यून वाले असंख्य ... यावत् असंख्य प्रदेश न्यून अवगाह वाले असंख्य। अतः इसे विषमावगाही गोलों की स्पर्शना से असंख्य गुण स्पर्शना हो जाती है। जिससे जीव प्रदेश भी असंख्य गुण हो जाते हैं। जघन्य पद में विषमावगाही गोलों की स्पर्शना नहीं होती क्योंकि निष्कुट में विषमावगाही गोले संभव नहीं है।

असत्कल्पना से यदि जघन्यपद में 100 जीवों के 1 करोड़ प्रदेश (प्रत्येक के 1 लाख) स्पर्शते हैं तो उत्कृष्ट में 1000 करोड़ जीवों के 10 कोटाकोटी प्रदेश होंगे

अव. 'गोला' की प्ररूपणा –

गा. 6 गोलक = कोई भी विवक्षित क्षेत्र में उत्कृष्ट पद या कोई भी एक निगोद को Main लक्ष्य में रखें। फिर वहीं पर समावगाही असंख्य निगोद होगी, तथा प्रदेश की हानि-वृद्धि से असंख्य निगोद वहाँ अड़ती होगी। उन सब निगोदों का एक

DATE ___/___/___

गोलक कहा जाता है।

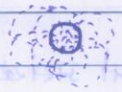

अब. अन्य गोलक की कल्पना –

गा. 7 पूर्वोक्त ~~main~~ लक्षण वाली निगोद को छोड़कर अन्य निगोद को उत्कृष्ट पद की कल्पना से लक्ष्य में रखकर अन्य गोलक बन जाता है।

अब. इस प्रकार कितने गोले बनते हैं –

गा. 8 इस प्रकार उसी गोले की अन्य-अन्य निगोद को उत्कृष्ट पद स्थापकर लोक में असंख्य गोले हो सकते हैं क्योंकि पूरा लोक निगोदों से भरा हुआ है।

अब. यहाँ प्रत्येक गोले में एक उत्कृष्ट पद कहा। और ये अखंड गोले तो असंख्य हैं। तो क्या उत्कृष्ट पद भी असंख्य हैं या और कोई रीति से उनकी गिनती होती है? –

गा. 9 अखंड गोले असंख्य होने से और उनमें रहे उत्कृष्ट पद का सभी दिशा में स्पर्शना होने से असंख्य उत्कृष्ट पद होंगे। ये व्यवहार नय से उत्कृष्ट पद है।
जो सर्व उत्कृष्ट ~~xx~~ जीव प्रदेश होने से नैश्चयिक उत्कृष्ट पद है, उसे अगली गाथा में कहूँगा।

अब. नैश्चयिक उत्कृष्ट पद –

गा. 10-11 जहाँ सूक्ष्म निगोद, बादर निगोद, सूक्ष्मपृथ्वीकायादि जीव हो तथा जहाँ सूक्ष्म या बादर निगोद-पृथ्वीकायादि के जीव विग्रहगति में पसार हो रहे हो, वह नैश्चयिक उत्कृष्ट पद है।
बादर निगोद सूक्ष्म निगोद की तरह निराधार उत्पन्न नहीं होती।
बादर निगोद का ग्रहण नहीं करें तो सभी अखंड गोले के उत्कृष्ट पद समान हो जाएँगे, अतः बादर निगोद ग्रहण की।

अब. गोलक-निगोद-जीवादि के प्रमाण –

गा. 12 पूरे लोकाकाश में असंख्य गोले। प्रत्येक गोले में असंख्य निगोद। निगोद = साधारण

शरीर। प्रत्येक निगोद में अनंत जीव। यह अनंत सिद्ध भ.की अनंत संख्या से भी अनंत गुण।

गा. 13 लोकाकाश और जीव, दोनों के प्रदेश एकदम तुल्य, क्योंकि केवलिसमुद्घात में पूरा लोक भरा जाता है। संकोच विशेष के कारण एक जीव की, एक निगोद की और एक गोलक की अवगाहना अंगुल का असंख्यातवां भाग। क्योंकि-

गा. 14 निगोद का प्रत्येक जीव पूरे शरीर को अवगाह कर रहता है। (इससे निगोद और जीव की समावगाहता सिद्ध हुई) तथा जहाँ एक निगोद है, वहीं अन्य असंख्य निगोद हैं। कुछ असंख्य निगोदों के टुकड़ों का उसमें समावेश होता है। उसे एक 'गोला' कहते हैं। उन निगोदों के शेष टुकड़े अन्य गोले में जाते हैं। (इससे गोले और निगोद की समावगाहता सिद्ध हुई)

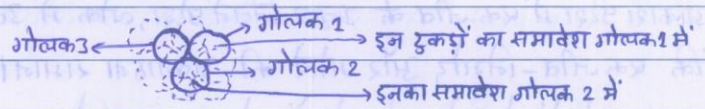

गा. 15 एक आकाश प्रदेश में उत्कृष्ट से एक जीव के, एक निगोद के, और एक गोले के कितने प्रदेश अवगाढ होते हैं?

अव. जीव की अपेक्षा से उत्तर देते हैं:-

गा. 16 सूक्ष्मनामकर्म के उदय से जीव के निगोदमात्र अवगाहना में प्रत्येक आकाश प्रदेश में असंख्य जीव प्रदेश अवगाढ होते हैं।

अव. निगोद की अपेक्षा से-

गा. 17 निगोद की अवगाहना से लोक का Division करने पर जो जवाब आए, उतने प्रदेश प्रत्येक जीव के एक-एक आकाशप्रदेश में निगोद में उत्कृष्ट से होते हैं।

अव. गोलक की अपेक्षा से-

गा. 18 द्रव्यार्थता= जीव द्रव्यों की संख्या।

प्रदेशार्थता= जीव प्रदेशों की संख्या।

द्रव्यार्थता से जीव द्रव्यों से असंख्य गुण प्रदेश प्रत्येक आकाशप्रदेश में उत्कृष्ट से हैं। अर्थात् एक गोले में असंख्य निगोद हैं। एक निगोद में जितने जीवप्रदेश हैं, उतने

DATE __/__/____

जीव एक गोले में है (इसलिए द्रव्यार्थता लिखा)। उससे भी असंख्यगुण जीवप्रदेश हैं।

अव. असंख्य यानि यहाँ कितनी राशि लेना? -
गा.19 यहाँ असंख्य यानि द्रव्यार्थता से सभी गोलक लेना अर्थात् पूरे लोक में जितने गोले हैं, वह संख्या राशि लेना। एक आकाश प्रदेश में एक जीव के जितने प्रदेश, उतने ही लोक में गोले हैं। उस राशि से निगोद में रहे जीवप्रदेशों को गुणकार करना।

अव. एक आकाश प्रदेश में एक जीव के उत्कृष्ट जितने प्रदेश, लोक में उतने ही गोले। क्यों? -
गा. 20-22 क्योंकि एक जीव-निगोद और गोले की अवगाहना समान। जीव की अवगाहना के आकाशप्रदेशों से लोक के प्रदेशों को Divide करने पर एक आकाश प्रदेश में रहे जीवप्रदेशों की संख्या आती है, वैसे ही जीव और गोला समान अवगाहना वाले होने से गोलों की संख्या भी आ जाएगी। अथवा यदि लोक के एक-एक प्रदेश पर एक-एक गोले को रखे तो उत्कृष्ट पद में जितने जीव प्रदेश हैं, उतने आकाश प्रदेश में लोक के सभी गोले आ जाएँगे।

अव. पूर्वपक्ष में जीवप्रदेश की संख्या और सर्व जीवों की संख्या का समत्व बताते हैं -
गा. 23-24 लोक में सभी गोले और जीव समावगाहना वाले हैं। कुछ सूक्ष्म जीव बड़े हैं, कुछ छोटे। किंतु उनकी अवगाहना का Average निकालने से सब जगह समान कहेंगे। तो स्पष्ट है कि एक आकाश प्रदेश में जितने जीव प्रदेश प्रत्येक गोले में हैं, उतने ही लोक में सर्व जीव हैं। कैसे? →
एक आकाश प्रदेश में जीवों के प्रदेशों की संख्या = 1 निगोद के अनंत जीव × असंख्य निगोद × असंख्य प्रदेश।
सर्व जीव की संख्या = 1 निगोद के अनंत जीव × असंख्य निगोद × असंख्य गोले।

अव. उत्तरपक्ष में सिद्ध करते हैं कि सर्व जीवों की संख्या उत्कृष्ट पद में रहे जीव प्रदेश की संख्या से न्यून है अथवा उत्कृष्ट पद में जीवप्रदेशों की संख्या सर्व जीवों

से विशेषाधिक है -

गा. 25-26 पूर्वपक्ष में सर्व जीवों की संख्या और उत्कृष्ट पद में जीव प्रदेशों की संख्या का जो समत्व सिद्ध किया है, वह जीवसंख्या-अवगाहनादि का Average मान लेकर सिद्ध किया है। किंतु Practical में ऐसा नहीं है। लोकांत में रहे खंड गोलों में लोकमध्यवर्ती गोलों की अपेक्षा स्पर्शनादि कम होने से जीवों की संख्या कम होती है। तथा बादर निगोद और विग्रह गति में रहे जीवों की अपेक्षा से उत्कृष्ट पद में रहे जीव प्रदेशों की संख्या सर्व जीवों की संख्या से विशेषाधिक होती है।

अब अन्य प्रकार से विशेषाधिकत्व बताने के लिए गा.27 में समत्व बताते हैं और गा.28 में अधिकत्व बताते हैं -

गा. 27 लोक में सभी जगह जीवों की संख्या प्राय: समान ही है। खंडगोलों में कुछ ही कम है। सूक्ष्म निगोदों की अवगाह भी प्राय: समान है। अत: बुद्धि से सभी जीवों को केवलिसमुद्घात की तरह पूरे लोक में फैला कर रखने पर जितने जीवप्रदेश एक आकाश प्रदेश में आएँगे, उतने ही जीवप्रदेश गोले के एक प्रदेश में रहते हैं। अत: उत्कृष्ट पद में जीव प्रदेश और सर्व जीव समान है।

गा. 28 इस प्रकार होने पर भी बादर निगोद की बहुलता से जीवप्रदेश सर्वजीवों से विशेष-अधिक होंगे।

अब इन राशियों को उदाहरण से बताते हैं -

गा. 29 सुखपूर्वक ग्रहण-ग्राहण के लिए इन राशियों के दृष्टांत को मैं स्थापना राशि के प्रमाणों से प्रत्यक्ष कहूँगा।

गा. 30 एक लाख गोले। एक गोले में एक लाख निगोद। प्रत्येक निगोद में 1 लाख जीव।

गा. 31 एक जीव के 100 करोड़ प्रदेश। उतने ही लोक के भी प्रदेश। गोलक-निगोद और जीवों की 10000 प्रदेश समावगाह है।

गा. 32 लोकाकाश में 10 हजार प्रदेश की अवगाहना वाले प्रत्येक जीव के एक-एक प्रदेश में लाख-लाख प्रदेश।

गा. 33 जघन्य पद में 100 जीवों के 1 करोड़ प्रदेश। उत्कृष्टपद को कहता हूँ -

DATE ___/___/___

गा. 34 उत्कृष्ट पद में 1000 करोड़ जीवों के 10कोड़ा-कोड़ी प्रदेश। सर्व सूक्ष्म निगोद के जीव भी 10कोड़ा-कोड़ी ही हैं।

गा. 35 सूक्ष्मनिगोद जीवों के प्रदेशों में 1करोड़ प्रदेश बादर निगोद के जोड़ने से उत्कृष्ट पद बनता है। तथा इतने ही अर्थात् 1करोड़ प्रदेश कम करने पर खंडगोला बनता है। उत्कृष्ट पद में 100 बादर निगोद जीवों की कल्पना होने से 1करोड़ प्रदेश कहे।

गा. 36 इन राशियों का अर्थोपनय (दार्ष्टान्तिक) यथासंभव विचारना। सद्भाव से तो वे अनंत अथवा असंख्य जानना अर्थात् वास्तविकता से जीवप्रदेश/जीव अनंत होंगे लोकाकाशप्रदेश-निगोद-गोला-उनकी अवगाहना असंख्य जानना।

इति निगोदषट्त्रिंशिका समाप्ता।

पुद्गलषट्त्रिंशिका

गा. 1 द्रव्य से सप्रदेशी-अप्रदेशी, क्षेत्र से सप्रदेशी-अप्रदेशी, काल से सप्रदेशी-अप्रदेशी और भाव से सप्रदेशी-अप्रदेशी पुद्गलों का अल्पबहुत्व संक्षेप में कहूँगा।

अब अप्रदेश अर्थात् प्रदेशरहित का स्वरूप बताते हैं-

गा. 2 द्रव्य से ~~परमाणु~~ परस्पर नहीं जुड़े हुए परमाणु प्रदेश रहित पुद्गल होते हैं। क्षेत्र से एक आकाशप्रदेश में व्याप्त पुद्गल प्रदेशरहित होते हैं। काल से एक समय की स्थिति वाले पुद्गल प्रदेश रहित होते हैं।

अब भाव से प्रदेशरहितता कहते हैं-(तथा उनकी अल्पता-)

गा. 3 कोई पुद्गल एक गुण वर्ण-गंध-रस-स्पर्श वाला हो, वह भाव से अप्रदेश है।
भाव से अप्रदेश पुद्गल सबसे अल्प होते हैं क्योंकि एक गुण से लेकर अनंतगुण तक के स्थान हैं। एक-एक गुण वर्तित्व रूप स्थानों पर रहे पुद्गल सबसे अल्प हैं।

अब काल अप्रदेशत्व का असंख्यगुणत्व कहते हैं-

गा. 4-6 भाव अप्रदेश पुद्गलों से काल अप्रदेश पुद्गल असंख्य गुण हैं। क्योंकि पुद्गलों

DATE ___/___/ 155

के वर्ण 5 हैं, गंध 2 हैं, रस 5 हैं, स्पर्श 8 हैं। प्रत्येक में एक गुण से लेकर अनंतगुण तक के स्थान हैं। तथा संघात-भेद-सूक्ष्मत्व-बादरत्व आदि परिणामों में भी प्रत्येक स्थान में एक समय की स्थिति वाले पुद्गल प्राप्त होते हैं। अथवा

जो पुद्गल भाव से अप्रदेशी हैं, वे 2प्र. के - 1. काल से सप्रदेशी 2. अप्रदेशी। तथा भाव से जो पुद्गल द्विआदि अनंतगुण तक सप्रदेशी पुद्गल हैं, वे भी काल से 2प्र. के - 1. सप्रदेशी 2. अप्रदेशी। अतः प्रत्येक गुणस्थान में काल-अप्रदेशी पुद्गलों की राशि होती है। तथा गुणस्थान अनंत होने से काल-अप्रदेश राशि भी अनंत होती है। जिससे काल-अप्रदेशी असंख्यगुण होते हैं।

अब पूर्वपक्ष -
गा. 7 यदि प्रत्येक गुणस्थान में काल-अप्रदेश राशि है तो काल-अप्रदेश राशि अनंतगुण होगी क्योंकि भाव-अप्रदेशी तो एक ही गुणस्थान में है जबकि काल-अप्रदेशी अनंत में।

अब उत्तर -
गा. 8 एकगुण की एक राशि। संख्यात गुण की संख्यात स्थान। असंख्यात गुण के असंख्य गुणस्थान। अनंतगुण के अनंत स्थान। इन चारों स्थानों में पुद्गल द्रव्य क्रमशः हीन-हीनतर हैं। ~~कुल द्रव्य सशि का संख्यातगुण वाले संख्यस्थान और असंख्यगुण वाले असंख्य स्थान,~~ दोनों मिलकर भी एकगुण स्थान में रहे द्रव्य से असंख्य गुण है। तथा अनंतगुण द्रव्य असंख्यस्थान वाले द्रव्यों से अनंतभाग विशेषाधिक है। अतः एक गुण द्रव्य राशि की अपेक्षा शेष 3 स्थानों में रहे द्रव्य असंख्य गुण ही है। अतः भाव परिणाम की अपेक्षा काल-अप्रदेशी असंख्य गुण ही है।

अब काल-अप्रदेशी = 1 समय की स्थिति। वह अनेक प्र. से हो सकती है - 1. द्रव्य के आश्रय से, 2. क्षेत्र के आश्रय से 3. भाव के आश्रय से इत्यादि। गा. 8 में भाव के आश्रय से काल-अप्रदेश पुद्गल कहे। अब द्रव्य के आश्रय से -
गा. 9 इस प्रकार एकादि गुण स्थान पर वर्तते वर्णादि परिणाम के आश्रय से काल-अप्रदेश

DATE ___/___/___

सिद्ध हैं। द्रव्य के आश्रय से भी ऐसे ही काल-अप्रदेशी पुद्गल होते हैं, जो पुद्गल या स्कंध एक समय रहकर संघात या भेद कर लेते हैं।

अव. क्षेत्र की अपेक्षा से काल-अप्रदेश →

गा. 10 इसी प्रकार क्षेत्र के आश्रय से भी काल-अप्रदेश पुद्गल होते हैं, जो परमाणु या स्कंध क्षेत्र में जाते हुए एक समय में रहकर पुनः अन्य क्षेत्र में चले जाते हैं।

अव. अवगाहना की अपेक्षा से काल-अप्रदेश →

गा. 11 संकोच और विकोच की अपेक्षा से अवगाहना से काल-अप्रदेश पुद्गल होते हैं।

उ. कोई स्कंध में विकोच कर स्वयं की अवगाहना बड़ी करे, एक समय रहकर पुनः संकोच से अवगाहना छोटी करे।

इसी प्रकार सूक्ष्म-बादर, स्थिर-अस्थिर, शुभ, मन, कर्म आदि परिणाम के आश्रय से भी काल-अप्रदेश होते हैं।

गा. 12 इस प्रकार जिनेश्वर द्वारा कहे गए पुद्गलों के सभी परिणामों में एक समय की स्थिति वाले पुद्गलों का काल-अप्रदेशत्व जानना।

गा. 13 इस प्रकार भाव-अप्रदेश से काल-अप्रदेश असंख्य गुण सिद्ध हुए।

अव. काल-अप्रदेश-द्रव्यअप्रदेश का ~~असंख्य~~ अल्पबहुत्व –

गा. 14 अनंतरोक्त काल-अप्रदेश पुद्गलों से द्रव्य-अप्रदेश असंख्य गुण होते हैं। द्रव्य-अप्रदेश = परमाणु।

अव. कैसे? –

गा. 15 लोक में अनंत पुद्गलों की ५ राशि हैं – 1. परमाणु 2. संख्यात अणु वाले स्कंध 3. असंख्य अणु वाले स्कंध 4. अनंत अणु वाले स्कंध।

गा. 16 लोक में अनंतप्रदेशिक स्कंध अनंत हैं किंतु द्रव्यतार्थता से वे सर्वस्तोक हैं अर्थात्

DATE ___/___/ 157

इन ५ राशि में अनंत अणु वाले स्कंध सबसे अल्प हैं। प्रदेशार्थतया वे ही स्कंध अनंतगुण हैं क्योंकि प्रत्येक स्कंध में अनंत अणु हैं।

~~जितने अनंताणुक स्कंध हैं, उनसे संख्यात गुण संख्याणुक स्कंध है। जितने संख्याणुक स्कंध हैं, वे ही स्कंध प्रदेशार्थतया संख्यात गुण हैं क्योंकि प्रत्येक स्कंध में संख्यात पुद्गल हैं।~~

~~जितने अनंताणुक स्कंध हैं, उनसे असंख्यगुण असंख्याणुक स्कंध हैं।~~

~~जितने अनंतअणुक स्कंध हैं, उनसे परमाणु अनंत गुण हैं। प्रदेशार्थता से भी परमाणु अनंत गुण ही क्योंकि परमाणु में प्रदेश नहीं होते।~~

~~ग. संख्यात अणुक स्कंधों~~

जितने अनंताणुक स्कंधों के पुद्गल हैं, परमाणु उनसे अनंतगुणा है। जितने परमाणु हैं, संख्यातप्रदेशिक स्कंध उनसे संख्य गुण। असंख्यातप्रदेशिक स्कंध उनसे असंख्य गुण है।

गा. 17 अतः अर्थापत्ति से परमाणु संख्यातप्रदेशिक पुद्गलों के संख्यातवें भाग में है। तथा असंख्यातप्रदेशिक पुद्गलों के असंख्यात-वें भाग में है।

गा. 18 ~~अतः~~ संख्यात प्रदेशिक पुद्गलों के संख्यातवें भाग में होने से परमाणु लोक में बहुत हैं। यदि कम होते तो असंख्यात या अनंत वें भाग में वर्तते।

गा. 19 परमाणु मात्र असंख्यप्रदेशिक स्कंध रूप एक राशि के ही असंख्यातवें भाग में वर्तते हैं। अतः परमाणुओं की संख्या लोक में बहुत होने से और काल-अप्रदेशी पुद्गलों की समय मात्र अवस्था होने से काल अप्रदेश पुद्गल द्रव्य अप्रदेश परमाणु से असंख्यात गुण होते हैं।

~~ब. द्रव्य-अप्रदेश और क्षेत्र-अप्रदेश का अल्पबहुत्व →~~

गा. 20 द्रव्य-अप्रदेश से क्षेत्र-अप्रदेश असंख्य गुणा होते हैं। परमाणु सभी क्षेत्र से अप्रदेशी ही होते हैं।

गा. 21 द्वयणुकादि से लेकर अनंताणुक तक प्रत्येक स्थान में क्षेत्र-अप्रदेशी पुद्गलों की राशि प्राप्त ~~ही~~ होती ही है। अतः सर्व परमाणु और एक आकाशप्रदेश में व्याप्त स्कंधों की राशि, दोनों मिलकर द्रव्य-अप्रदेशी से असंख्यगुण होते हैं।

DATE ___/___/___

अब भव क्षेत्र से सप्रदेशों का असंख्यगुणत्व कहते हैं-

गा. 22 इन क्षेत्र-अप्रदेशों से क्षेत्र-सप्रदेशी असंख्य गुना होते हैं। कैसे-
द्व्यणुक की दो राशि- 1. एक प्रदेश में अवगाह 2. दो प्रदेश अवगाह।
त्र्यणुक की तीन राशि- 1. एक प्रदेश 2. दो प्रदेश 3. तीन प्रदेश अवगाह। इस प्रकार असंख्याणुक स्कंध की क्षेत्रावगाहन की अपेक्षा से असंख्य राशि। अनंताणुक स्कंध की अनंत राशि नहीं होगी क्योंकि लोकाकाश प्रदेश असंख्य ही हैं।
इस प्रकार एक प्रदेश अवगाह स्कंधों को छोड़कर सभी राशि क्षेत्र से सप्रदेश है।

गा. 23 एक प्रदेश में अवगाह पुद्गलों का एक ही स्थान है। अधिक प्रदेश में अवगाह पुद्गलों के असंख्य प्रदेश होने से असंख्य स्थान हैं। अतः क्षेत्र सप्रदेश पुद्गल क्षेत्र अप्रदेश से असंख्य गुना है।

अब भव द्रव्य, काल और भाव से सप्रदेशों के प्रमाण कहते हैं-

गा. 24 क्षेत्र सप्रदेश पुद्गलों से द्रव्य सप्रदेश पुद्गल विशेषाधिक हैं। द्रव्य सप्रदेश से काल-सप्रदेश पुद्गलों से विशेषाधिक हैं। काल सप्रदेश से भाव सप्रदेश पुद्गल विशेषाधिक हैं।

अब विशेषाधिक का हेतु-

गा. 25 जिस कारण से अप्रदेश पुद्गलों के भाव को आदि में रखकर असंख्य गुण वृद्धि है अर्थात् भाव-अप्रदेश से काल-अप्रदेश, उससे द्रव्य-अप्रदेश, उससे क्षेत्र-अप्रदेश असंख्य गुण हैं; उसी कारण से उनके विपरीत क्रम में विशेषाधिक वृद्धि है।
eg. Total पुद्गल = 1 लाख। संख्य गुण = $\frac{1 \text{ लाख}}{5}$। असंख्य = 10। अनंत = 50।
भाव-अप्रदेश सबसे अल्प माने 10 पुद्गल हैं। उससे असंख्य गुण 100 पुद्गल काल-अप्रदेश। उससे असंख्य गुण 1000 द्रव्य-अप्रदेश। उससे असंख्य गुण 10000 क्षेत्र-अप्रदेश। अब इससे विपरीत यदि भाव अप्रदेश 10 पुद्गल हैं तो भाव-सप्रदेश 99990 होंगे। इसी प्रकार काल-अप्रदेश 99900, द्रव्य-अप्रदेश 99000, क्षेत्र-अप्रदेश 90000 होंगे।

पुद्गल	अप्रदेशी	सप्रदेशी	सर्वद्रव्य
भावसे	10	99990	100000
कालसे	100	99900	100000
द्रव्यसे	1000	99000	100000
क्षेत्र से	10000	90000	100000

इनमें सप्रदेशी विशेषाधिक ही हैं क्योंकि कम-से-कम संख्यात गुण द्विगुण कहा जाता है।

अब. अभी तक अप्रदेशी और सप्रदेशी का अलग-अलग अल्पबहुत्व कहा। अब दोनों का मिश्र अल्पबहुत्व कहते हैं-

गा. 26-27 क्षेत्र-अप्रदेशी से क्षेत्र-सप्रदेशी असंख्यगुण है। क्षेत्र-सप्रदेशी सप्रदेशियों में सबसे अल्प है। अर्थात् सभी सप्रदेशी अप्रदेशियों से असंख्य गुण है। सप्रदेशी उनमें विशेषाधिक हैं।

अब अल्पबहुत्व की संख्या-

गा. 28 पहले द्रव्यादि अप्रदेशों का अल्पबहुत्व। फिर सप्रदेशों का। फिर मिश्र। इस प्रकार 3 अल्पबहुत्व हैं, जो टीका-व्याख्यान में कहे गए हैं। श्रीभगवती सूत्र में एक मिश्र ही अल्पबहुत्व कहा है।

अब सप्रदेशों में परस्पर हानि-वृद्धि का प्रमाण →

गा. 29 अप्रदेशी भाव-काल-द्रव्य-क्षेत्र में जो वृद्धि होती है, वही सप्रदेशों में हानि होती है। दृ. कुल पुद्गल 100000 →

	अप्रदेश	सप्रदेश
भाव	1000	99000
काल	2000	98000
द्रव्य	5000	95000
क्षेत्र	10000	90000

DATE ___/___/___

यहाँ काल-अप्रदेशों से भाव-अप्रदेश 1000 ज्यादा हैं, वही भाव-सप्रदेश काल-सप्रदेश से 1000 कम हैं। इत्यादि।

गा. 30 अथवा सप्रदेशों में जो हानि है, वही सप्रदेशों में वृद्धि है। ex. क्षेत्र-अप्रदेश से द्रव्य-अप्रदेश 5000 कम हैं, वही क्षेत्र-सप्रदेश से द्रव्यसप्रदेश 5000 ज्यादा हैं। इत्यादि।

गा. 31-32 जो पुद्गल यहाँ लाख कहे गए, वास्तव में वे अनंत हैं। उनकी सप्रदेश-अप्रदेश की अपेक्षा से परस्पर हानि-वृद्धि कही गई।

अव. उपर्युक्त अल्पबहुत्वों का असत्कल्पना से दृष्टांत →

गा. 33 इन राशियों का निदर्शन प्रत्यक्ष कहता हूँ। सर्व पुद्गल = 1 लाख।

गा. 34 भाव-अप्रदेश 1000, काल-अप्रदेश 2000, द्रव्य-अप्रदेश 5000, क्षेत्र-अप्रदेश 10000।

गा. 35 क्षेत्र-सप्रदेश 90000, द्रव्य-सप्रदेश 95000, कालसप्रदेश 98000, भावसप्रदेश 99000।

गा. 36 इन सप्रदेश-अप्रदेश राशि की अर्थभावना योग्य रीति से करना। परमार्थ से तो सभी पुद्गल अनंत जानना।

इति पुद्गलषत्रिंशिका। समाप्ता।

बन्धषत्रिंशिका

अव. औदारिकादि के सर्वबंधक-देशबंधक-अबंधक जीवों का अल्पबहुत्व →

गा. 1 सर्वबंधक सबसे कम। अबंधक उनसे विशेषाधिक। देशबंधक उनसे असंख्य गुण। यह अल्पबहुत्व कैसे जानना? वह कहेंगे।

अव. सर्वबंधादि का स्वरूप कहते हैं -

गा. 2 जैसे अग्नि घी की कड़ाई में डालने पर पहले समय घी ग्रहण करता ही है, वैसे एक शरीर को छोड़कर दूसरी गति में गया हुआ जीव उत्पत्ति के पहले समय औदारिकादि पुद्गलों को ग्रहण करते ही हैं = सर्वबंध।

वह पहला दूसरे वि. समय में घी ग्रहण भी करता है और छोड़ता भी है, वैसे जीव द्वितीय वि. समय में पुद्गल ग्रहण भी करता है और छोड़ता भी है =

देशबंध।

सिद्ध, वैक्रियबंधक और वैग्रहिक जीवों को औदारिक का अबंधक जानना।

गा. 3 सर्वबंध साधारण वनस्पति में भी होता है। अतः सर्वबंधक सिद्धों से अनंतगुण हैं। तो सिद्ध सर्वबंधक से अनंतवें भाग में ही हैं।

सिद्ध अनंत है। देव और नारक रूप वैक्रियबंधक असंख्य ही है। अतः वैक्रियबंधक तो सिद्ध के भी अनंतवें भाग में है।

अतः ऊपर गा.२ में कहे गए अबंधकों में सिद्ध और वैक्रियबंधक बहुत अल्प है। ये दोनों अल्प होने के कारण गा.३ में इनकी विवक्षा नहीं की। वहाँ मात्र वैग्रहिक जीवों के आश्रय से अबंधकों को सर्वबंधक से विशेषाधिक कहा है।

अव. पूर्वपक्ष में इन तीनों जीवराशी की समानता बताते हैं -

गा. 4-6 जीवों की गति ३प्र. - ऋजु, एकवक्रा, द्विवक्रा। ऋजुगति में पहले समय ही सभी जीव सर्वबंधक होते हैं, उनकी एक राशि।

दूसरी एकवक्रा गति में पहले समय अबंधक, दूसरे समय सर्वबंधक। एकवक्रा गति से उत्पन्न होने वाले जीवों में सर्वबंधक प्रायः आधे होते हैं क्योंकि जब दूसरे समय में वे जीव सर्वबंधक होते हैं, तभी उसी समय में एकवक्रा गति से निकले जीव पहला समय होने से अबंधक होते हैं। अतः एकवक्रागति में Total जीवों से प्रायः आधे सर्वबंधक। उनकी दूसरी राशि।

तीसरी द्विवक्रा गति में प्रथम दो समय तक अबंधक, तीसरे समय में सर्वबंधक। द्विवक्रा गति से उत्पन्न होने वाले जीवों में सर्वबंधक प्रायः तीसरे भाग के होते हैं क्योंकि प्रथम समय में निकले जीव जब सर्वबंधक तीसरे समय में होंगे, तब तीसरे समय में द्वितीय और तृतीय समय में निकले जीव अबंधक होंगे। उनकी तीसरी राशि।

इस प्रकार किसी एक विवक्षित समय में सर्वबंधक जीवों की ३ राशि- 1. ऋजुगति वाले 2. एकवक्रा गति में द्वितीय समय वाले 3. द्विवक्रा गति में तृतीय समय वाले।

तथा इसी प्रकार किसी एक विवक्षित समय में अबंधक जीवों की भी ३ राशि- 1. एकवक्रा गति में प्रथम समय वाले 2-3. द्विवक्रा गति में प्रथम-द्वितीय समय वाले।

इस प्रकार राशि से सर्वबंधक और अबंधक समान हैं किंतु संख्या में भिन्न हैं।

DATE ___/___/___

वे संख्या में जैसे अल्प होते हैं, वैसे हे शिष्य! तू सुन।

अब उत्तरपक्ष में अल्पबहुत्व सिद्ध करते हैं -

गा. 7 जो जीव ऋजुगति से उत्पन्न होते हैं, वे लोकमध्य में रहे निगोद में सेनमें छहों दिशा से अनुश्रेणि द्वारा आते हैं। जो एकवक्रा गति से उत्पन्न होते हैं, वे तीन प्रतर से आते हैं। जो द्विवक्रा गति से उत्पन्न होते हैं, वे 3 प्रतर सिवाय अन्य लोक से आते हैं।

गा. 8 (तीन प्रतर का स्वरूप →) लोक के मध्य में रही निगोद की चौड़ाई जितनी प्रतर है दिशाओं में लंबी - 1. उत्तर-दक्षिण 2. पूर्व-पश्चिम 3. ऊर्ध्व-अधो। ये तीन प्रतर हैं।

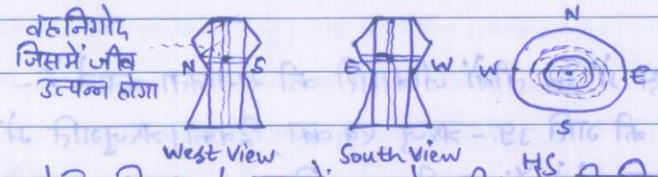

इन तीन प्रतरों में अनुश्रेणि सिवाय के स्थानों पर रहे जीव को विवक्षित निगोद में जन्म लेने के लिए एक वक्र लेना पड़ेगा।

~~इन प्रतर में यदि~~ जन्म लेने वाला जीव यदि इन तीन प्रतर में नहीं है, शेष लोक में है तो उसे कम-से-कम 2 वक्र लेने पड़ेंगे।

गा. 9 (इन तीन गति से उत्पन्न होने वाले जीवों का अल्पबहुत्व →) जो जीव एकवक्रा गति से उत्पन्न होते हैं, वे ऋजुगति से उत्पन्न होने वाले जीवों से असंख्यगुण हैं। इसी प्रकार द्विवक्रा गति से उत्पन्न होने वाले जीव उनसे भी असंख्य गुण हैं।

क्यों? क्योंकि क्षेत्र असंख्य गुण हैं।

गा. 10 एकवक्रा और द्विवक्रा गति में ज्यादा जीव होने से अबंधक सर्वबंधक से विशेषाधिक हैं क्योंकि एकवक्रा के प्रथम समय और द्विवक्रा के प्रथम-द्वितीय समय में वर्तते जीवों की तीन राशि की संख्या ऋजुगति, एकवक्रा का द्वितीय और द्विवक्रा के तृतीय समय में वर्तते जीवों से बढ़ जाएगी।

अब. प्र. विग्रह गति 4 समय की भी होती है, उसमें वर्तते जीवों की संख्या कहाँ? →

गा. 11 4 समय वाली विग्रहगति में वर्तते जीवों से की अपेक्षा अबंधक जीव संख्य गुण

होते हैं, विशेषाधिक नहीं।

अव. सर्वबंधक- अबंधक का दृष्टांत स्थापना राशि से कहते हैं:-

गा. 12 ऋजुगति से उत्पन्न होने वाले सर्वबंधक की राशि 1000, क्षेत्र अल्प होने से।
द्विसमयवाली गति से उत्पन्न होने वाले जीवों की 2 राशि, 1. अबंधक, 2. सर्वबंधक। प्रत्येक राशि 1 लाख प्रमाण, क्षेत्र अधिक होने से।
तीन समय वाली गति से उत्पन्न होने वाले जीवों की 3 राशि। प्रत्येक 1 करोड़ प्रमाण, क्षेत्र अधिक होने से।

इस प्रकार Total सर्वबंधक - 1000 + 100000 + 10000000 = 10101000

Total अबंधक - 100000 + 2 x 10000000 = 20100000

अत: अबंधक विशेषाधिक हैं।

गा. 13 इन राशि का यथासंभव अर्थोपनय करना।

अव. सर्वबंधक-अबंधक से देशबंधक असंख्य गुण कैसे? →

गा. 14-15 एक निगोद में एक असंख्यातवां भाग हमेशा (अर्थात् अनंत जीव प्रमाण, निगोद का असंख्यातवां भाग) जन्म-मरण में वर्तता है। इस प्रकार शेष सभी निगोदों में भी होता है। अत: निगोदों का असंख्यातवां भाग हमेशा जन्म-मरण में वर्तता है। निगोद जीवों की आयु भगवान् ने अंतमुहूर्त कही है। अत:-

गा. 16 उनकी आयु के समयों के जितने वें भाग में विग्रह गति के समय हैं, देशबंधकों के उतने वें भाग में अबंधक जीव रहेंगे। अर्थात्

गा. 17 देशबंधकों के असंख्यात वें भाग में अबंधक या सर्वबंधक जीव होते हैं। अत: अबंधकों से देशबंधक असंख्य गुण होते हैं।

अव. औदारिक बंधक कहे गए। वैक्रिय बंधक-

गा. 18 वैक्रिय-आहारक-तैजस-कार्मण पठित सिद्ध हैं। फिर भी कुछ विशेष कहूँगा। पहले वैक्रिय बंधक-

गा. 19 वैक्रिय के सर्वबंधक अर्थात् प्रथम समय वाले देव-नारकादि सबसे अल्प

DATE __/__/__

हैं क्योंकि उनका काल अल्प है।
वैक्रिय के देशबंधक उनसे असंख्यगुण हैं क्योंकि देशबंध का काल सर्वबंधकाल की अपेक्षा असंख्य गुण है। वे देशबंधक जीव कौन-से हैं-
गा 20 वैक्रियबंधक में से सर्वबंधक को छोड़कर शेष सभी वैक्रियबंधक जीव देशबंधक हैं।
वैक्रिय के अबंधक देशबंधकों से अनंतगुण हैं क्योंकि सभी औदारिक आहारकादि के बंधक, सिद्ध और विग्रहगति में रहे देव-नारकादि वैक्रिय के अबंधक हैं।

अब. आहारकबंधक कहते हैं-
गा. 21-22 आहारक के सर्वबंधक सबसे अल्प, वे 2, 3, 5 या 10 होते हैं। (अर्थात् जब होते हैं तब 1 से 10 तक होते हैं)
उन सर्वबंधकों से देशबंधक संख्यातगुण, ये उत्कृष्ट से सहस्रपृथक्त्व होते हैं।
कहा गया है- आहारकशरीर में जघन्य अंतर 1 समय, उत्कृष्ट 6 मास होता है। उत्कृष्ट से वे सहस्रपृथक्त्व होते हैं।1
14 पूर्वी संसार में 4 बार ही आहारक शरीर बनाता है, एक भव में तो 2 बार ही बनाता है।2
तीर्थंकर ऋद्धि दर्शन, सूक्ष्मपदार्थ ग्रहण करने और संशयव्युच्छेद के लिए तीर्थंकर के पास जाते हैं।3
उन देशबंधकों से आहारक अबंधक अनंतगुण होते हैं। औदारिक-वैक्रिय आदि के बंधक, विग्रहगतिवाले और सिद्ध आहारक के अबंधक हैं।

अब. तैजस शरीर और कार्मण के बंधक कहते हैं-
गा. 23 तैजस के अबंधक सबसे अल्प, वे सिद्ध हैं। शेष सभी संसारी जीव देशबंधक हैं। वे देशबंधक अनंतगुण हैं।
कार्मण के बंधक भी तैजसबंधक की तरह ही है। ज्ञानावरणादि प्रभेद के बंधक भी ऐसे ही हैं, मात्र आयुकर्म में भिन्नपन है।

अव. आयुकर्म के बंधक का भिन्नपन –

गा. 24 आयु के देशबंधक जीव सबसे कम हैं क्योंकि उसका बंधकाल बहुत अल्प है। तैजसशरीर और कार्मणशरीर के सर्वबंधक जीव नहीं होते क्योंकि उनका बंध अनादि है।

प्र. जो जीव आयु के अबंधक हैं, वे ही आयु के बंधक होते हैं। जब वे आयु का बंध प्रारंभ करते हैं, तब सर्वबंधक क्यों नहीं होते?

उ. जब वह बंध करता है, तब भी उदय में आया हुआ आयुष्य कर्म के पुद्गल तो खिरते ही रहते हैं। अत: सर्व बंध नहीं होता।

आयुष्य के देश बंधक जीवों से अबंधक जीव संख्य गुण होते हैं क्योंकि अबंध का काल बंधकाल से बहुत गुण होता है।

प्र. आयुष्य के अबंधकों को असंख्य गुण क्यों नहीं कहा क्योंकि निगोद सिवाय सभी असंख्य जीवों का आयुष्य अनेक वर्ष प्रमाण होने से बंधकाल से अबंधकाल असंख्य गुण होगा?

उ. यह सूत्र निगोद के आश्रय से है। शेष जीव तो अनंतवे भाग मात्र होने से कुछ फर्क नहीं पड़ता। यदि सिद्ध को जोड़ दें तो भी वे अनंतवे भाग मात्र ही रहेंगे। निगोद जीवों का आयुष्य उत्कृष्ट से अंतर्मुहूर्त ही है, अत: बंधकाल से वह संख्य गुण ही होता है।

अव. पूर्वपक्ष आयु के अबंधक जीवों के असंख्य गुण होने की आपत्ति देता है –

गा. 25 निगोद से प्रत्येक समय एक असंख्यातवां भाग निकलता है। वह बद्धायु होता है। उनसे अन्य असंख्य गुण जीव अबद्धायु होते हैं। अत: अबंधक जीव असंख्य गुण होते हैं।

अव. उत्तरपक्ष –

DATE ___/___/___

हैं क्योंकि उनका काल अल्प है।
वैक्रिय के देशबंधक उनसे असंख्यगुण हैं क्योंकि देशबंध का काल सर्वबंधकाल की अपेक्षा असंख्यगुण है। वे देशबंधक जीव कौन-से हैं-
गा 20 वैक्रियबंधक में से सर्वबंधक को छोड़कर शेष सभी वैक्रियबंधक जीव देशबंधक हैं।
वैक्रिय के अबंधक देशबंधकों से अनंतगुण हैं क्योंकि सभी औदारिक आहारकादि के बंधक, सिद्ध और विग्रहगति में रहे देव-नारकादि वैक्रिय के अबंधक हैं।

अब. आहारकबंधक कहते हैं-
गा. 21-22 आहारक के सर्वबंधक सबसे अल्प, वे 2, 3, 5 या 10 होते हैं। (अर्थात् जब होते हैं तब 1 से 10 तक होते हैं)
उन सर्वबंधकों से देशबंधक संख्यातगुण, ये उत्कृष्ट से सहस्रपृथक्त्व होते हैं।
कहा गया है- आहारकशरीर में जघन्य अंतर 1 समय, उत्कृष्ट 6 मास होता है। उत्कृष्ट से वे सहस्रपृथक्त्व होते हैं।1
14 पूर्वी संसार में 4 बार ही आहारक शरीर बनाता है, एक भव में तो 2 बार ही बनाता है।2
तीर्थंकर ऋद्धि दर्शन, सूक्ष्मपदार्थ ग्रहण करने और संशयव्युच्छेद के लिए तीर्थंकर के पास जाते हैं।3
उन देशबंधकों से आहारक अबंधक अनंतगुण होते हैं। औदारिक-वैक्रिय आदि के बंधक, विग्रहगतिवाले और सिद्ध आहारक के अबंधक हैं।

अब. तैजस शरीर और कार्मण के बंधक कहते हैं-
गा. 23 तैजस के अबंधक सबसे अल्प, वे सिद्ध हैं। शेष सभी संसारी जीव देशबंधक हैं। वे देशबंधक अनंतगुण हैं।
कार्मण के बंधक भी तैजसबंधक की तरह ही है। ज्ञानावरणादि 7भेद के बंधक भी ऐसे ही हैं, मात्र आयुकर्म में भिन्नपन है।

DATE / /

गा. 26 इन जीवों के मरण का काल एक समय है और आयु बंध काल अंतर्मुहूर्त है। अतः निगोद जीवों के आयुष्य की अपेक्षा बंधकाल संख्यातवें भाग में है। अतः अबंधक संख्य गुण हैं।

गा. 27-28 असत्कल्पना से निगोद जीवों की आयु 1 लाख समय। बंधकाल 1000 समय। Division करने पर 100 प्राप्त हुआ। अतः देशबंधक जीव 100वें भाग में वर्तेंगे। लाख की अपेक्षा 100 ~~संख्य गुण~~ संख्यातवां भाग है। अतः अबंधक जीव संख्य गुण हैं।

अब तैजस-कार्मण के बंधक कहे गए। अब संयोग से इनका अल्पबहुत्व -

गा. 29 आहारक शरीर के सर्वबंधक सबसे अल्प क्योंकि वे 14 पूर्वी ही तथाविध प्रयोजन वाले बनाते हैं। आहारक के देशबंधक संख्य गुण (कारण गा. 21 में कहा गया)।

गा. 30 आहारक के देश बंधकों से वैक्रिय सर्वबंधक असंख्यगुण क्योंकि असंख्य देवादि एक समय में उत्पन्न होते हैं।

गा. 31 वैक्रिय सर्वबंधकों से वैक्रिय देशबंधक असंख्यगुण क्योंकि देशबंध काल सर्वबंध-काल से असंख्य गुण है। अथवा सर्वबंधक प्रतिपद्यमान होते हैं, देशबंधक पूर्वप्रतिपन्न होते हैं। पूर्वप्रतिपन्न प्रतिपद्यमान से ज्यादा होते हैं।

उनसे तैजस-कार्मण के अबंधक अनंतगुण हैं क्योंकि वे सिद्ध हैं। सिद्ध जीव वनस्पति सिवाय सभी जीवों से अनंतगुण हैं।

गा. 32 तैजसकार्मण के अबंधकों से औदारिक सर्वबंधक अनंतगुण है। औदारिक के ही अबंधक विशेषाधिक है क्योंकि इनमें विग्रहगति वाले जीव, सिद्ध, वैक्रियादि के बंधक भी होते हैं।

औदारिक के देशबंधक असंख्यगुण क्योंकि देशबंध का काल असंख्य गुणा है।

गा. 33-34 औदारिक देशबंधकों से तैजसकार्मण के देशबंधक विशेषाधिक हैं क्योंकि जो औदारिक के देशबंधक हैं, उनमें विग्रहगति के जीव, औदारिक सर्वबंधक और वैक्रिय आदि के बंधक भी जोड़ना। तैजसकार्मण के देशबंधक सभी संसारी जीव हैं।

गा. 35 तैजस-कार्मण के देश बंधकों से वैक्रिय के अबंधक विशेषाधिक हैं क्योंकि वैक्रिय के बंधक प्रायः देव-नारक ही है, शेष संसारी जीव और सिद्ध अबंधक हैं।

DATE ___/___/ 167

अतः तैजसकार्मण के देश बंधकों में से असंख्य देव-नारक कम करना और अनंत सिद्ध जोड़ने पर राशि देशबंधक बनेगी। विशेषाधिक बनेगी।

गा. 36 वैक्रिय अबंधकों से आहारक अबंधक विशेषाधिक हैं क्योंकि वैक्रियाबंधक में असंख्य देव-नारक के जीव जोड़ना और संख्यात जीव आहारक बंधक कम (उत्कृष्ट से 1000 पृथक्त्व) कम करने पर राशि विशेषाधिक बनेगी।

★ ~~गा.~~ औदारिक-वैक्रिय-आहारक-तैजस-कार्मण के सर्वबंधक-देशबंधक-अबंधक का अल्पबहुत्व (गा. 29-36) →

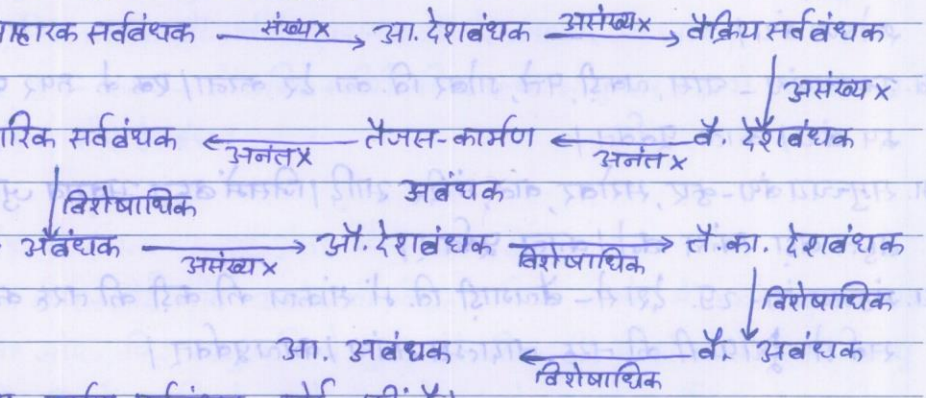

(तैजस-कार्मण सर्वबंधक कोई नहीं है)

★ बंध के अधिकार से थोड़ा बंध का स्वरूप कहते हैं -

बंध 2 प्र. - 1. प्रयोग बंध 2. विस्रसा बंध।

1. प्रयोग बंध - 3 प्र. (a) अनादि-अनन्त (b) सादि अनंत (c) सादि सांत।

(a) अनादि-अनंत → आत्मा के मध्य के 8 रुचक प्रदेशों में अनादि-अनंत बंध है क्योंकि प्रत्येक रुचक प्रदेश 2 तिर्यग् दिशा + 1 ऊर्ध्व/अधो दिशा से में कर्म सहित आत्मप्रदेशों से अनादि-अनंत भांगे में घिरा हुआ है।

(b) सादि-अनंत → सिद्धों के जीव प्रदेशों का बंध सादि-अनंत है क्योंकि शैलेशी अवस्था में एक बार उनके आत्म प्रदेश एक आकार में fix हुए, वह आकार अब कभी नहीं बदलेगा।

DATE / /

(C) सादि-सांत बंध ५ प्रकार का है-

A. आलापन बंध- घास, लकड़ी, दर्भ आदि का समूह आलापन बंध जानना। इसका जघन्यकाल अंतर्मुहूर्त, उत्कृष्ट संख्यात काल। आलापन यानि रस्सी वि. से बांधे जाने वाले बंध।

B. आलिपेयापन बंध- यह ५प्र.-

क. श्लेषणा बंध- दीवाल, खंभा, महल, घड़ा वि. का बंध। इसका जघन्य काल अंतर्मुहूर्त, उत्कृष्ट संख्यात काल। जो बंध सीमेंट, गोंद वि. से होते हैं, वे श्लेषणा बंध।

ख. उच्चयबंध - घास, लकड़ी, पत्ते, गोबर वि. का ढेर करना। एक के ऊपर एक रहने रूप बंध। काल पूर्ववत्।

ग. समुच्चय बंध- कुए, सरोवर, वाव, मंदिर आदि। जिसमें बहुत अवयव जुड़ कर बहुत बड़ा स्कंध बने। काल पूर्ववत्।

घ. संहनन बंध- २प्र. देश से- बैलगाड़ी वि. में सांकल की कड़ी की तरह का बंध। सर्व से- दूधपानी की तरह तादात्म्य संबंध। कालपूर्ववत्।

C. शरीर बंध - २प्र. -

क. पूर्वप्रयोग प्रत्ययिक - समुद्घात को प्राप्त नारकादि के जीवप्रदेश के आश्रित तैजस-कार्मण शरीर के प्रदेशों का बंध (रचना विशेष) अर्थात् जिसमें भवधारणीय शरीर और वैक्रियादि शरीर ~~अथवा शरीर के बाहर निकले~~ आत्मप्रदेशों में व्याप्त हो।

ख. प्रत्युत्पन्न प्रयोग प्रत्ययिक - केवली समुद्घात में ४थे समय केवली के आत्मप्रदेश पूरे लोकाकाश में व्याप्त होते हैं। फिर ५वें समय में प्रदेशों को संहरते हुए तैजस-कार्मण शरीर का जो बंध (संघात) होता है, वह प्रत्युत्पन्न प्रयोग के निमित्त वाला होता है। प्रत्युत्पन्न यानि अपूर्व, जो पहले कभी न हुआ हो। ५वें समय जैसा जीव संसार-चक्र में कभी नहीं होता। अलबत्त ६ठे, ७वें ~~और ८वें~~ समय में भी ऐसा ही योग होता है किंतु ५वें समय की अपेक्षा वह अपूर्व नहीं होता।

D. शरीरप्रयोगबंध- ६५.

क. औदारिक - सर्वबंध १समय का।

देशबंध जघन्य से एक समय, उत्कृष्ट से १समय न्यून ३पल्योपम।

सर्वबंध में जघन्य अंतर ३समयन्यून क्षुल्लकभव, उत्कृष्ट ३३सा.+१पूर्वक्रोड़+१समय।

देशबंध में जघन्य अंतर १समय, उत्कृष्ट ३३सा.+३समय।

प्र. देशबंध की जघन्य-उत्कृष्ट स्थिति कैसे होती है?

उ. जघन्य १समय→ वायु, मनुष्य या पंचें. तिर्यंच वैक्रिय शरीर बनाए। शरीर बनाकर छोड़े, फिर १समय औ. सर्वबंध, १समय औ. देशबंध कर मर जाए।

उत्कृष्ट ३प.-१समय→ औदारिक शरीरी की उत्कृष्ट आयु ३प.। उसमें प्रथम समय सर्वबंध, शेष देशबंध।

प्र. सर्वबंध में जघन्य-उत्कृष्ट अंतर कैसे घटता है?

उ. जघन्य अंतर→कोई जीव ३समय की विग्रह गति से निगोद में जन्मे। क्षुल्लकभव जितना जीए, फिर ऋजुगति से पुनः औदारिक शरीर में ही जन्मे। उसकी आयु की गिनती विग्रहगति के पहले समय से शुरु हो जाएगी अर्थात् २५६ आवलिका जितनी आयु विग्रह गति के ३समय मिलाकर है। प्रथम २समय अनाहारक (अर्थात् प्रथम समय देशबंधक रहेगा, द्वितीय समय अनाहारक), तीसरे समय में सर्वबंधक, पुनः नए भव में पहले समय ही सर्वबंधक। अतः क्षुल्लकभव में विग्रहगति के ३समय न्यून सर्वबंधक का जघन्य अंतर।

उत्कृष्ट→कोई जीव ऋजुगति से मनुष्य बनकर १पूर्वक्रोड़ आयु समाप्त कर ३३सा. आयु वाला नारक या ~~सर्व~~ देव बने। वहाँ से च्यवकर ३समय की विग्रह गति से औदारिक शरीर में जन्मे। १पूर्वक्रोड़ के प्रथम समय वह सर्वबंधक था तथा पुनः विग्रहगति के तीसरे समय में सर्वबंधक बना। अतः Total काल=

१पूर्वक्रोड़ - ~~१समय~~ + ३३सा. + २समय विग्रहगति के = १पूर्वक्रोड़ + १समय + ३३सा.
1

प्र. देशबंध में जघन्य-उत्कृष्ट स्थिति कैसे घटेगी?

DATE / /

उ. जघन्य- औदारिकशरीरी मरकर ~~सूक्ष्म~~ ऋजुगति से पुन: औ.शरीरी बने तो वहाँ ~~प्रथम समय रूप~~ सर्वबंधक रूप ।समय का जघन्य अंतर।
उत्कृष्ट-कोई जीव(औ.शरीरी) मरकर ३३सा. आयु वाला देव या नारक बने। पुन: ३समय के विग्रह से औ. शरीरी बने तो उत्कृष्ट अंतर ३३सा.+ ३समय विग्रह गति के।

ख. वैक्रिय- सर्व बंध जघन्य से ।समय, उत्कृष्ट २ समय।
देश बंध जघन्य से ।समय, उत्कृष्ट ।समय न्यून ३३सा.।
सर्व बंध का अंतर जघन्य से ।समय, उत्कृष्ट से अनंत काल।
देश बंध का अंतर जघन्य से ।समय, उत्कृष्ट से अनंत काल।

प्र. वैक्रिय सर्वबंध जघन्य-उत्कृष्ट कैसे घटेगा?
उ. जघन्य→ वैक्रिय शरीर में उत्पन्न या लब्धि से वैक्रिय शरीर बनाते हुए प्रथम समय।
उत्कृष्ट→ औ.शरीरी वैक्रियता को प्राप्त करता हुआ ।समय सर्वबंधक होकर मरे। मरकर ऋजुगति से नारक या देव बने तो लगातार २समय सर्वबंध।

प्र. वैक्रिय देशबंध जघन्य-उत्कृष्ट कैसे घटेगा?
उ. जघन्य→ औ.शरीर वैक्रियता को प्राप्त करता हुआ ।समय सर्वबंध कर दूसरे समय देशबंध करे। तीसरे समय में मर जाए तो देशबंध ।समय।
उत्कृष्ट→ देव या नारक में ३३सा. की आयु में से सर्वबंध का ।समय छोड़ देने से ३३सा.-।समय।

प्र. वैक्रिय सर्वबंध का जघन्य-उत्कृष्ट अंतर कैसे घटेगा?
उ. जघन्य→ औ. शरीर वैक्रिय शरीर बनाते हुए प्रथम समय में सर्वबंध करके द्वितीय समय में देशबंध करे। तृतीय समय में ऋजुगति से देव या नारक बने तो जघन्य अंतर ।समय।

DATE __/__/ 171

उत्कृष्ट → कोई देव या नारक, वहाँ से निकलकर अनंतकाल तक औ. शरीरी वनस्पत्यादि में रहे। पुनः वहाँ से निकलकर वैक्रिय शरीर में जन्मे तब।
देशबंध का जघन्य-उत्कृष्ट अंतर भी पूर्वोक्त रीति से घटाना।

ग. आहारक – सर्वबंध (समय)।
देशबंध जघन्य या उत्कृष्ट से अंतर्मुहूर्त क्योंकि अंतर्मुहूर्त बाद अवश्य औ. शरीर का ग्रहण करते हैं।
सर्वबंध का जघन्य अंतर अंतर्मुहूर्त, उत्कृष्ट से देशोन अर्द्ध पुद्गलपरावर्त।
देशबंध का अंतर भी जघन्य-उत्कृष्ट सर्वबंध की तरह।

प्र. सर्वबंध का जघन्य-उत्कृष्ट अंतर कैसे घटेगा?
उ. जघन्य → आहारक शरीर को प्रतिपन्न जीव प्रथम समय में सर्वबंधक होता है।
अंतर्मुहूर्त बाद पुनः औ. शरीर में आए, अंतर्मुहूर्त बाद पुनः आ. शरीर बनाए।
तो पुनः प्रथम समय सर्वबंध। इस प्रकार कुल अंतर =
। अंतर्मुहूर्त + । अंतर्मुहूर्त (औ. शरीर का) दोनों अंतर्मुहूर्त के एकत्व की विवक्षा से अंतर्मुहूर्त।

घ. तैजस – सर्वबंध नहीं है क्योंकि अनादि है।
देशबंध २ प्र. – अनादि अनंत अभव्यों को।
अनादि सांत भव्यों को।
दोनों भांगों में अंतर नहीं है।

ङ. कार्मण – तैजस जैसे ही।

2. विस्रसा बंध – २ प्र.
@ अनादि-अनंत → धर्म-अधर्म-आकाश के प्रदेशों का परस्पर बंध (संयोग)।
वह दूध-पानी जैसा सर्वबंध नहीं है किंतु साकल्य की कड़ी जैसा है।

DATE / /

(b) सादि-सांत → 3 प्र.

A. बंधन प्रत्ययिक → द्विप्रदेश से लेकर अनंत प्रदेशी स्कंधों का विषममात्रा वाले स्निग्ध, रूक्षपन से बंध। जघन्य काल 1 समय, उत्कृष्ट असंख्य उत्सर्पिणी-अवसर्पिणी।

B. भाजन प्रत्ययिक → पुरानी मदिरा, गुड, चावल वि. का जमना, चिपकना। काल जघन्य से अंतर्मुहूर्त, उत्कृष्ट से संख्यात काल।

C. परिणाम प्रत्ययिक → बादल वि. का बंध। काल जघन्य से 1 समय, उत्कृष्ट से 6 मास।

बंध

- प्रयोग
  - अनादि अनंत
  - सादि अनंत
    - आलापन
    - अल्लियापन
      - श्लेषणा
      - उच्चय
      - समुच्चय
      - संहनन
    - शरीर
      - पूर्वप्रयोग प्रत्य.
      - प्रत्युत्पन्नप्रयोग.
    - शरीर प्रयोग
      - औदारिक
      - वैक्रिय
      - आहारक
      - तैजस
      - कार्मण
  - सादि सांत
- विस्रसा
  - अनादि-अनंत
  - सादि सांत
    - बंधन प्रत्ययिक
    - भाजन प्रत्ययिक
    - परिणाम प्रत्य.

(Pg.No. 167 से 171 तक की Summary)

इति श्रीबन्धषट्त्रिंशिका समाप्ता ॥

श्रीभगवतीटीकायां नवाङ्गीटीकाकारश्री अभयदेवसूरिणो द्धृतं सवृत्तिकं श्च इदं श्रीषट्त्रिंशिका-चतुष्कप्रकरणं लिखितं समाप्तम्।

समाप्तिवासर: → वि.सं 2073 फा. व. 12 ई.सन् 2017। स्थानम् - परिमलसंघ:, अहमदाबाद।